पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज

Celebrating *Azadi Ka Amrit Mahotsav*, a one day webinar on "Conservation and value addition of fruits of Forest origin" was organized by Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj on 2nd July, 2021.

Azadi Ka Amrit Mahotsav is an initiative of the Government of India to celebrate and commemorate 75 years of progressive India and the glorious history of its people, culture and achievements. This Mahotsav is dedicated to the people of India who have not only been instrumental in bringing India thus far in its evolutionary journey but also hold within them the power and potential to enable Prime Minister Modi's vision of activating India 2.0, fuelled by the spirit of Atmanirbhar Bharat. It is an embodiment of all that is progressive about India's socio-cultural, political and economic identity.

Also United Nations is observing 2021 as the International Year of Fruits and Vegetables (IYFV) to highlight the vital role of fruits and vegetables in human nutrition and food security, as well as urging efforts to improve sustainable production and reduce waste. Domestication of fruit plants is an age-old practice in anywhere in the world. Indian subcontinent had rich diversity of wild fruit origin plants, known to only local people and forest-dwellers, who use them as food or medicines and source of income. These plants are neither become very popular, nor create a

good market in the country; though some of them are nutritionally very rich and some have great medicinal value. Due to human intervention and deforestation we may have already lose some of their variety from their natural habitat. With the COVID-19 pandemic the need to transform and rebalance the way our food is produced and consumed has only been further stressed. Thus, the Webinar on conservation and value addition of fruits of forest origin was organized in which eminent scholars shared their knowledge on conservation, sustainable utilization, value addition, genetic diversity of wild edible fruits with more than 100 participants who got connected online. At the beginning of the program, Center Head Dr. Sanjay Singh in his welcome address apprised about the outline of the program and emphasized the value of vast resources wild edible fruit species available in the country for livelihood generation. The webinar was co-ordinated by Dr. Anita Tomar, Scientist F and Dr. Anubha Srivastav, Scientist C.

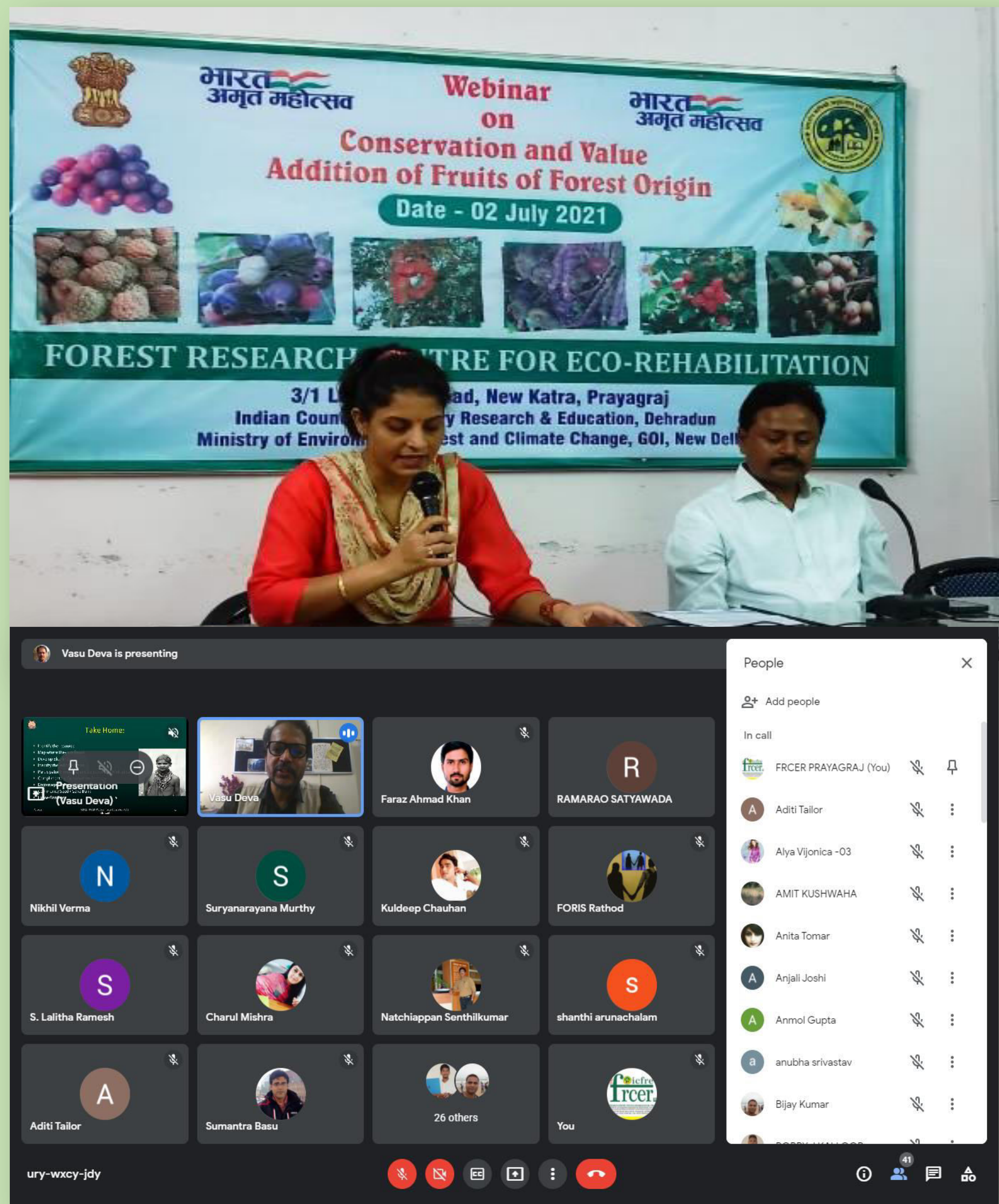

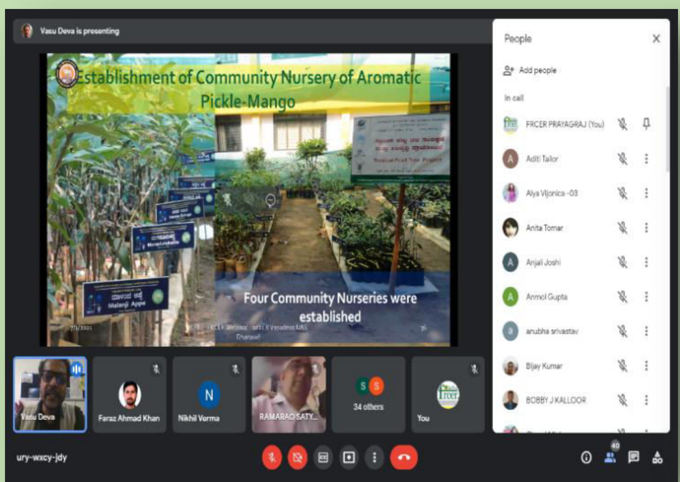
Vasu Deva is presenting
Establishment of Community Nursery of Aromatic Pickle-Mango
Four Community Nurseries were established
People
Add people
In call
FRCER PRAYAGRAJ (You)
Aditi Tailor
Alya Vijonica -03
Anita Tomar
Anjali Joshi
Anmol Gupta
anubha srivastav
Bijay Kumar
BOBBY J KALLOOR
Vasu Deva
Faraz Ahmad Khan
Nikhil Verma
RAMARAO SATY...
34 others
You
ury-wxcy-jdy

Dr. Vijay singh Meena is presenting
Dr. Vijay singh Meena
Vasu Deva
43 others
You
People
Add people
narita berry
Natchiappan Senthilkumar
Nikhil Verma
Pankaj Singh
Rahul Nishad
RAMARAO SATYAWADA
S. Lalitha Ramesh
Sachin Sharma
12:00 PM
ury-wxcy-jdy

PROGRAMME SCHEDULE

2 JULY, 2021

11:00 AM	Inauguration of Conference
11:05-11:15 AM	Welcome Address by Head, FRCER- **Dr. Sanjay Singh**
11:15-11:45 AM	Speaker: **Prof. R. Vasudeva** Professor and Head Department of Forest Biology, College of Forestry, University of Agriculture Sciences, Dharwad, Karnataka Topic: *Conservation and utilization of wild edible fruits resources of the Western Ghats*
11:50-12:20 PM	Speaker: **Dr. Lobrang Wangchu** Associate Professor and Head Department of Fruit Science, College of Horticulture and Forestry, CAU, Pasighat, Arunachal Pradesh Topic: *Importance of wild fruits in human nutrition*
12:25-12:55 PM	Speaker: **Prof. S. Rama Rao** Department of Biotechnology and Bioinformatics , North-Eastern Hill University, Shillong Topic: *Genetic diversity analysis of wild edible fruits*
01:00-01:30 PM	Speaker: **Dr. Vijay Singh Meena** Scientist Sr. Scale- (Fruit Science) OIC, ICAR-NBPGR, Regional Station, Jodhpur CAZRI Campus, Rajasthan Topic: *Conservation of wild fruits of Semi-Arid region*
	Question and Answer session

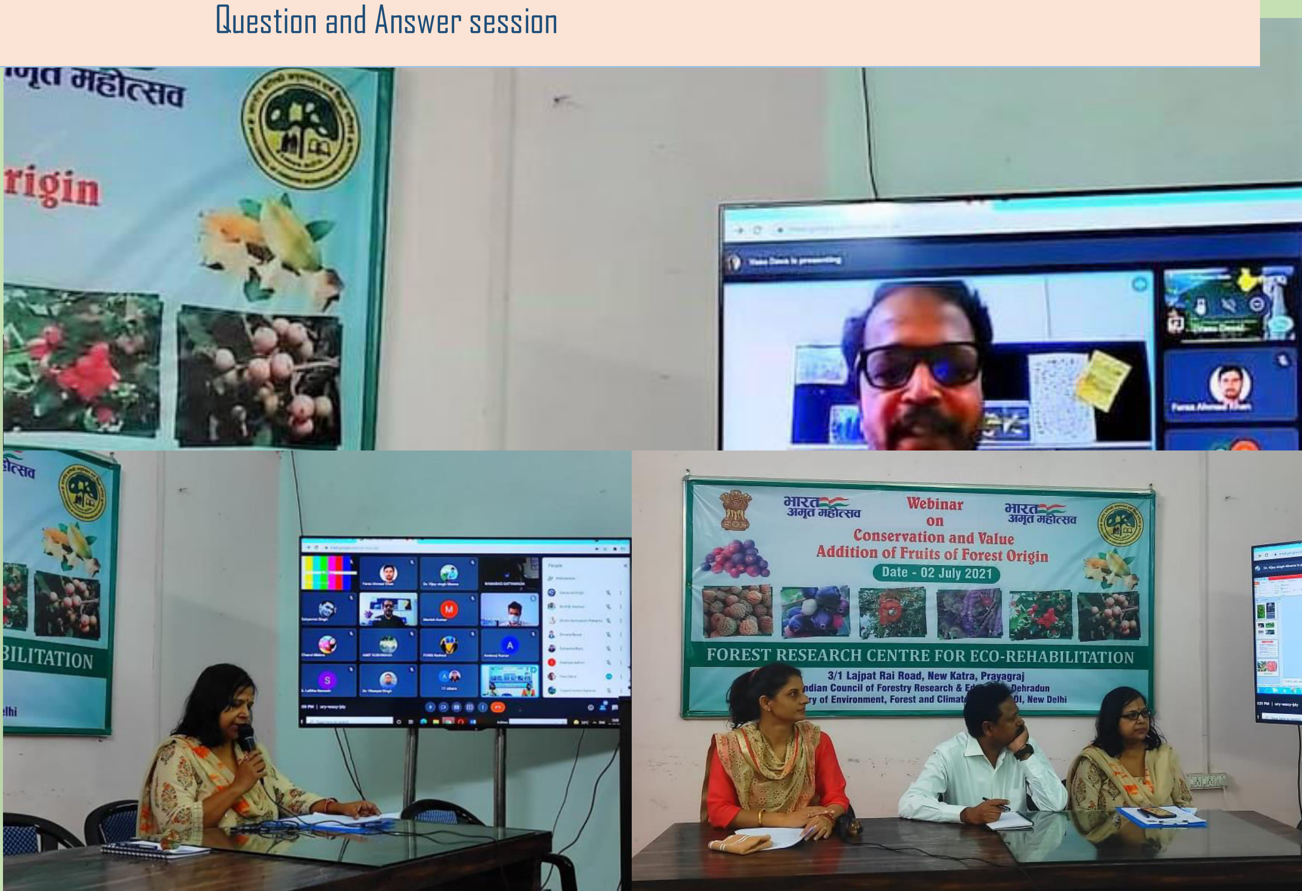

NEWS COVERAGE

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र में 'वनो से उत्पन्न फलों का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन' विषय पर एक दिवसीय वेबीनार का आयोजन

प्रयागराज। आज दिनांक 02.07.2021 को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र परिसर मे भारत ... ना भारत अमृत ... तर्गत कोविड-19 ... करते हुए "वनो ... का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन" विषय पर एक दिवसीय वेबीनार का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह ने अपने स्वागत भाषण मे कार्यक्रम की रूप रेखा से अवगत कराया तथा भारत अमृत महोत्सव पर विस्तृत चर्चा की उन्होने इस योजना मे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के योगदान से भी अवगत कराया। कार्यक्रम के प्रथम वक्ता के तौर पर प्रो0 आर0 वासुदेव, प्रमुख, वन एवं जीवविज्ञान प्रभाग, वानिकी महाविद्यालय, कृषिविज्ञान महाविद्यालय, धरवाड़, कर्नाटक ने पश्चिमी घाट के जंगली खाद्य फल संसाधनो का संरक्षण तथा उपयोग विषय पर अपने अनुभव साझा किया। डा0 लोबरंग वान्चू, सह-आचार्य और प्रमुख, फल विज्ञान विभाग, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, सीएयू, पासीघाट, अरुणांचल प्रदेश ने मानव पोषाहार मे जंगली फलो के महत्व पर प्रकाश डाला। वक्ता प्रो0 एस0 रामा राव, जैव प्रौद्योगिकी एवं जैव सूचना विज्ञान विभाग, उत्तर-पूर्वी पहाड़ी विश्वविद्यालय, शिलांग ने जंगली खाद्य फलो का आनुवांशिक विविधता विश्लेषण विषय पर विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम के अन्त मे डा0 विजय सिंह मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (फल विज्ञान), कार्यालय प्रभारी, आईसीएआर-एनबीपीजीआर, क्षेत्रीय स्थान, जोधपुर सीएजेडआरआई परिसर, राजस्थान ने अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र के जंगली फलो का संरक्षण विषय पर चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डा0 अनीता तोमर ने वानिकी प्रजातियो से प्राप्त होने वाले आर्थिक महत्व के जंगली फलो जैसे आमरा, बड़हल, फालसा, करौंदा तथा कदम्ब आदि के संवर्धन एवं संरक्षण के विकास पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 कुमुद दूबे ने बंजर भूमि पुनरुद्धार मे फलदार प्रजातियो महुआ, बेर तथा जामुन के रोपण से स्थानीय जन को होने वाले आर्थिक लाभ पर चर्चा किया। कार्यक्रम सह-समन्वयक तथा वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव द्वारा आर्थिक महत्व के फलो यथा आँवला, बेल तथा सहजन आदि विभिन्न फलो का मूल्य संवर्धन कर उनके व्यावसायिक विपणन पर चर्चा किया साथ ही इनके कुशल नेतृत्व मे कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम मे देश भर से लगभग 250-300 वैज्ञानिको तथा शोध छात्र/छात्राओ ने ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया साथ ही कुछ उत्साहित प्रगतिशील किसानो ने कार्यक्रम के माध्यम से जानकारी प्राप्त किया।

फलों के संरक्षण को लेकर किया मंथन

जासं, प्रयागराज : पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र परिसर में भारत अमृत महोत्सव के तहत 'वनों से उत्पन्न फलों का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी हुई। केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की।

मुख्य वक्ता व कर्नाटक के प्रमुख वन एवं जीवविज्ञान प्रभाग, वानिकी महाविद्यालय के प्रो. आर. वासुदेव, कर्नाटक ने पश्चिमी घाट के जंगली खाद्य फल संसाधनों का संरक्षण व उपयोग पर अनुभव साझा किए। अरुणाचल प्रदेश के फल विज्ञान विभाग, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय , सीएयू, पासीघाट के सह आचार्य डा. लोबरंग वांग्चू ने मानव पोषाहार में जंगली फलों के महत्व पर प्रकाश डाला। शिलांग के जैव प्रौद्योगिकी एवं जैव सूचना विज्ञान विभाग के प्रो. एस रामा राव ने जंगली खाद्य फलों की आनुवांशिक विविधता विश्लेषण विषय पर विस्तृत चर्चा की। जोधपुर के आइसीएआर-एनबीपीजीआर कार्यालय प्रभारी डा. विजय सिंह मीणा ने अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र के जंगली फलों का संरक्षण पर चर्चा की। केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा कार्यक्रम समन्वयक डा. अनीता तोमर ने वानिकी प्रजातियों से प्राप्त होने वाले आर्थिक महत्व के जंगली फलों जैसे-आमरा, बड़हल, फालसा, करौंदा व कदंब आदि के संवर्धन एवं संरक्षण के बारे में बताया। वरिष्ठ विज्ञानी डा. कुमुद दुबे, डा. अनुभा श्रीवास्तव ने भी अपने विचार दिए।

वनों से उत्पन्न फूलों के संरक्षण पर हुई चर्चा

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र परिसर में शुक्रवार को अमृत महोत्सव के तहत वनों से उत्पन्न फलों का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन विषय पर एक दिनी वेबिनार आयोजित किया गया। जिससे देशभर से 300 से अधिक वैज्ञानिक जुड़े। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि वनों की सुरक्षा से पर्यावरण और मानव जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित होगी। इस मौके पर प्रो.आर वासुदेव, डॉ. लोबरंग वांग्चू, प्रो.एस रामाराव तथा डॉ. विजय सिंह मीणा ने विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त किए। समन्वय डॉ. अनीता तोमर ने किया। डॉ. कुमुद दूबे ने महुआ, बेर तथा जामुन के रोपण से स्थानीय जन को होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने आर्थिक महत्व के फलों जैसे आँवला, बेल तथा सहजन आदि के बारे में विस्तार से बताया।

फलों के संरक्षण को लेकर किया मंथन

PRAYAGRAJ (2 July): पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र परिसर में भारत अमृत महोत्सव के तहत 'वनों से उत्पन्न फलों का संरक्षण एवं मूल्यवर्धन' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी हुई. केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की. भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के योगदान के बारे में बताया गया. मुख्य वक्ता व कर्नाटक के प्रमुख वन एवं जीवविज्ञान प्रभाग, वानिकी महाविद्यालय के प्रो. आर. वासुदेव, कर्नाटक ने पश्चिमी घाट के जंगली खाद्य फल संसाधनों का संरक्षण व उपयोग पर अनुभव साझा किए. अरुणाचल प्रदेश के फल विज्ञान विभाग, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय , सीएयू, पासीघाट के सह आचार्य डा. लोबरंग वांग्चू ने मानव पोषाहार में जंगली फलों के महत्व पर प्रकाश डाला. शिलांग के जैव प्रौद्योगिकी एवं जैव सूचना विज्ञान विभाग के प्रो. एस रामा राव ने जंगली खाद्य फलों की आनुवांशिक विविधता विश्लेषण विषय पर विस्तृत चर्चा की.